Toppersnotes
Unleash the topper in you

C-TET

सेंट्रल टीचर एलिजिबिलिटी टेस्ट

CENTRAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

प्राथमिक स्तर

भाग – 1 (स)

संस्कृत

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

1. अव्यय	1
2. उपसर्ग	7
3. प्रत्यय	11
4. समास	38
5. संख्याज्ञानम्	53
6. समयज्ञानम्	58
7. महेश्वरसूत्राणि प्रश्नाः	61
8. वर्ण विचार	65
9. संधि	75
10. शब्द	94
11. धातु रूप व लकार	101
12. कारक व विभक्ति	105
13. क्रिया	111
14. वाच्य	114
15. वचन	120
16. विलोम शब्द	130
17. वाक्य निर्माण	137
18. वाक्य परिवर्तन	141
19. पर्यायवाची शब्द	143
20. संस्कृत भाषा में प्रश्न निर्माण	147
21. छंद	150
22. अपठित पद्यांश	161
23. अपठित गद्यांश	164
24. संस्कृत शिक्षण विधियाँ	167
25. संस्कृत भाषा कौशल विकास	207
26. मूल्यांकन	217

प्रत्यय

" प्रतीयते विधीयते इति प्रत्ययः ।

* जो मूल प्रकृति [शब्द व धातु] के अन्त में जुड़कर नये पदों का निर्माण करते हैं प्रत्यय कहलाते हैं।

प्रत्यय के प्रकार — 3

[1.] कृदन्त प्रत्यय → जो धातु के अन्त में जुड़ते हैं।

[2.] तद्धित प्रत्यय → जो शब्दों के अन्त में जुड़ते हैं।

[3.] स्त्री - प्रत्यय → जो पुल्लिंग शब्दों का स्त्रीलिंग शब्दों में परिवर्तित करते हैं।

कृदन्त प्रत्यय — जो धातु के अन्त में जुड़कर नये पदों का निर्माण करते हैं वे कृदन्त प्रत्यय कहलाते हैं। प्रत्यय सदैव अपशेष अवस्था में प्रयुक्त होते हैं।

* कृदन्त प्रत्ययों की कुछ विशेषताएं होती हैं। जैसे —

(i) किसी भी धातु के कोई सा भी प्रत्यय लगता है तो उस धातु में गुण अथवा वृद्धि क्रिया होती है।

* धातुओं में सभी जगह गुण क्रिया होती है परन्तु जिन प्रत्ययों में ञ/ण का लोप होता है उन प्रत्ययों में अचो ञ्णिति सूत्र से आवश्यकता अनुसार वृद्धि क्रिया होती है।

NOTE :- लिख्, विद्, मुद्, कृच्, दृश्, भुज्, ... इत्यादि धातुओं में कभी भी वृद्धि क्रिया नहीं होती है।

(ii) धातु के अन्त में हलन्त हो तथा प्रत्यय का प्रारम्भिक वर्ण व्यञ्जन हो तो धातु के हलन्त को हटाने के लिए इट् (इ) का आगम हो जाता है।

NOTE :- पंचम वर्ण अर्थात अनुनासिक वर्ण अन्त में हो तो **इट्** का आगम नहीं होता है

(iii) धातु का अंतिम वर्ण च / ज हो तथा प्रत्यय का प्रारंभिक वर्ण त हो तो "चो : कु" सूत्र से च/ज के स्थान पर क वर्ग हो जाता है। अर्थात च/ज के स्थान पर क् हो जाता है।

* " चजो : कु घिण्यतो : सूत्र से घञ् / ण्यत् प्रत्ययों में च/ज के स्थान पर [क/ग] वर्ग हो जाता है।

NOTE :- " पूज , अर्च , त्यज , शिक्ष इन चारों धातुओं में कभी कोई परिवर्तन नहीं होता है।

(iv) जिन प्रत्ययों में क् का लोप होता है। उन प्रत्ययों को कित [क् + इत] कहा जाता है।

* कित [क् + इत] प्रत्ययों की 3 विशेषताएँ होती हैं।

(i) धातु में गुण, वृद्धि क्रिया का अभाव

(ii) धातु के अन्तिम पञ्चम वर्ण का लोप

(iii) सम्प्रसारण क्रिया होती है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

* सम्प्रसारण क्रिया → यण सन्धि के विलोम को सम्प्रसारण कहते हैं अतः कित (क् + इत्) प्रत्ययों में "वह् / वस् / वच् इन तीनों धातुओं के व के स्थान पर उ हो जाता है।

कृदन्त
प्रत्यय

(1) तुमुन् प्रत्यय → इस प्रत्यय का तुम् शेष रहता है। यह प्रत्यय के लिए अर्थ में प्रयुक्त होता है।

* इस प्रत्यय में धातु में गुण क्रिया होती है।
* इस प्रत्यय में हलन्त युक्त धातुओं में इट् (इ) का आगम होता है
* इस प्रत्यय में धातु के अन्तिम च् / ज् के स्थान पर क् हो जाता है।
* इस प्रत्यय में दृश् धातु के स्थान पर द्रष्, सृज् धातु के स्थान पर स्रष् व प्रच्छ् के स्थान पर प्रष् हो जाता है। और अन्त में ष्टुत्व सन्धि होजाती है।

दृश् → द्रष्
सृज् → स्रष्
प्रच्छ् → प्रष्

* इस प्रत्यय में वह् / सह् धातुओं में "ह्" का लोप हो जाता है। तथा प्रारम्भ में "ओ" की मात्रा लग जाती है एवं प्रत्यय के त् के स्थान पर ढ् हो जाता है।

ह् का लोप व ओ लगाना
वह् → वहन करना → वोढुम्
सह् → सहन करना → सोढुम्
त् के स्थान पर ढ्

Toppersnotes
Unleash the topper in you

उदाहरण

पठ + तुमुन् = पठितुम्
लिख् + तुमुन् = लेखितुम्
हस् + तुमुन् = हसितुम्
रक्ष् + तुमुन् = रक्षितुम्
वद् + तुमुन् = वदितुम्
वस् + तुमुन् = वसितुम्
मुद् + तुमुन् = मोदितुम्
नी + तुमुन् = नेतुम्
जि + तुमुन् = जेतुम्
चि + तुमुन् = चेतुम्
क्री + तुमुन् = क्रेतुम्

भी + तुमुन् = भेतुम्
श्रु + तुमुन् = श्रोतुम्
कृ + तुमुन् = कर्तुम्
गम् + तुमुन् = गन्तुम्
हन् + तुमुन् = हन्तुम्
मन् + तुमुन् = मन्तुम्
दृश् + तुमुन् = द्रष्टुम्
स्रज् + तुमुन् = स्रष्टुम्
प्रच्छ् + तुमुन् = प्रष्टुम्

वह् + तुमुन् = वोढुम्
सह् + तुमुन् = सोढुम्
पच् + तुमुन् = पक्तुम्
वच् + तुमुन् = वक्तुम्
मुच् + तुमुन् = मोक्तुम्
त्यज् + तुमुन् = त्यक्तुम्
भुज् + तुमुन् = भोक्तुम्
भज् + तुमुन् = भक्तुम्
पूज् + तुमुन् = पूजितुम्
शिक्ष् + तुमुन् = शिक्षितुम्

[2.] तव्यत् / तव्य प्रत्यय

* इस प्रत्यय का तव्य शेष रहता है। यह प्रत्यय योग्य / चाहिए अर्थ में प्रयुक्त होता है।

* इस प्रत्यय में धातु में गुण क्रिया होती है।

* इस प्रत्यय में हलन्त पुष्य धातुओं में इट (इ) का आगम होता है

Toppersnotes
Unleash the topper in you

* इस प्रत्यय में धातु के अन्तिम च/ज के स्थान पर क् हो जाता है

उदाहरण

तव्य / तव्यत्

पठ + तव्यत् = पठितव्य:
लिख + तव्यत् = लेखितव्य:
हस + तव्यत् = हसितव्य:
रक्ष + तव्यत् = रक्षितव्य:
वद् + तव्यत् = वदितव्य:
वस् + तव्यत् = वसितव्य:
मुद् + तव्यत् = मोदितव्य:
नी + तव्यत् = नेतव्य:
जि + तव्यत् = जेतव्य:
चि + तव्यत् = चेतव्य:
क्री + तव्यत् = क्रेतव्य:

भी + तव्यत् = भेतव्य:
श्रु + तव्यत् = श्रोतव्य:
कृ + तव्यत् = कर्तव्य:
गम् + तव्यत् = गन्तव्य:
हन् + तव्यत् = हन्तव्य:
मन् + तव्यत् = मन्तव्य:
दृश् + तव्यत् = द्रष्टव्य:
सृज् + तव्यत् = स्रष्टव्य
प्रच्छ् + तव्यत् = प्रष्टव्य:

वह् + तव्यत् = वोढव्य:
सह् + तव्यत् = सोढव्य:
पच् + तव्यत् = पक्तव्य:
वच् + तव्यत् = वक्तव्य:
मुच् + तव्यत् = मोक्तव्य:
त्यज् + तव्यत् = त्यक्तव्य:
भुज् + तव्यत् = भोक्तव्य:
भज् + तव्यत् = भक्तव्य:
पूज् + तव्यत् = पूजितव्य:
शिक्ष् + तव्यत् = शिक्षितव्य:

[3.] अनीयर् प्रत्यय

* इस प्रत्यय का अनीय शेष रहता है। यह प्रत्यय योग्य / चाहिए अर्थ में प्रयुक्त होता है।

* इस प्रत्यय में गुण क्रिया होती है। तथा स्वरान्त धातुओं में

गुण क्रिया के बाद अत्यादि सन्धि हो जाती है

Ex :-

पठ् + अनीयर् = पठनीय :
लिख् + अनीयर् = लेखनीय :
हस् + अनीयर् = हसनीय :
रक्ष् + अनीयर् = रक्षणीय :
वस् + अनीयर् = वसनीय :
गम् + अनीयर् = गमनीय :
हन् + अनीयर् = हननीय :
मन् + अनीयर् = मननीय :
वच् + अनीयर् = वचनीय :
पच् + अनीयर् = पचनीय :
सुच् + अनीयर् = सोचनीय :
भज् + अनीयर् = भजनीय :
भुज् + अनीयर् = भोजनीय :
त्यज् + अनीयर् = त्यजनीय :
पूज् + अनीयर् = पूजनीय :
शिक्ष् + अनीयर् = शिक्षणीय :
सृज् + अनीयर् = सर्जनीय :
दृश् + अनीयर् = दर्शनीय :
वह् + अनीयर् = वहनीय :
सह् + अनीयर् = सहनीय :
रम् + अनीयर् = रमणीय :

कृ + अनीयर् = करणीय :

अत्यादि सन्धि

नी + अनीयर् = नयनीय :
जि + अनीयर् = जयनीय :
भी + अनीयर् = भयनीय :
क्री + अनीयर् = क्रयणीय :
चि + अनीयर् = चयनीय :
हु + अनीयर् = हवनीय :
श्रु + अनीयर् = श्रवणीय :
भू + अनीयर् = भवनीय :

[4] ल्युट् प्रत्यय

* इस प्रत्यय का "यु" शेष रहता है यूवोरनाकौ सूत्र से यु के स्थान पर अन हो जाता है।

* इस प्रत्यय से बनने वाला शब्द सदैव नपुंसकलिंग होता है अतः अन के स्थान पर अनम् हो जाता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

* यह प्रत्यय योग्य / चाहिए अर्थ में प्रयुक्त होता है

* इस प्रत्यय में गुण क्रिया होती है। तथा स्वरान्त धातुओं में गुण क्रिया के बाद अयादि सन्धि हो जाती है

Ex :-

पठ् + ल्युट् = पठनम्
लिख् + ल्युट् = लेखनम्
हस् + ल्युट् = हसनम्
रक्ष् + ल्युट् = रक्षणम्
वस् + ल्युट् = वसनम्
गम् + ल्युट् = गमनम्
हन् + ल्युट् = हननम्
मन् + ल्युट् = मननम्
वच् + ल्युट् = वचनम्
पच् + ल्युट् = पचनम्
मुच् + ल्युट् = मोचनम्

भज् + ल्युट् = भजनम्
भुज् + ल्युट् = भोजनम्
त्यज् + ल्युट् = त्यजनम्
पूज् + ल्युट् = पूजनम्
शिक्ष् + ल्युट् = शिक्षणम्
सृज् + ल्युट् = सर्जनम्
दृश् + ल्युट् = दर्शनम्
वह् + ल्युट् = वहनम्
सह् + ल्युट् = सहनम्
रम् + ल्युट् = रमणम्
कृ + ल्युट् = करणम्

<u>अयादि सन्धि</u>
↓
=

नी + ल्युट् = नयनम्
जि + ल्युट् = जयनम्
भी + ल्युट् = भयनम्
क्री + ल्युट् = क्रयणम्
चि + ल्युट् = चयनम्
हु + ल्युट् = हवनम्
श्रु + ल्युट् = श्रवणम्
भू + ल्युट् = भवनम्

[5] ण्वुल् प्रत्यय

* इस प्रत्यय का "वु" शेष रहता है "युवोरनाकौ सूत्र" से "वु" के स्थान पर "अक" हो जाता है
* यह प्रत्यय "वाला" अर्थ में प्रयुक्त होता है।
* इस प्रत्यय में "ण्" का लोप हुआ है। अतः आवश्यकतानुसार इस प्रत्यय में वृद्धि क्रिया होती है।
* इस प्रत्यय में "हन्" धातु के स्थान पर "घत्" हो जाता है।

Ex:-

हन् + ण्वुल्
↓ ↓
हन् वु
↓ ↓
घत् + अक = घातक :

पठ् + ण्वुल् = पाठक :
वद् + ण्वुल् = वादक :
रक्ष् + ण्वुल् = रक्षक :
पूज् + ण्वुल् = पूजक :
शिक्ष् + ण्वुल् = शिक्षक :
वर्ध् + ण्वुल् = वर्धक :
गम् + ण्वुल् = गामक :
मन् + ण्वुल् = मानक :

मुद् + ण्वुल् = मोदक :
मुच् + ण्वुल् = मोचक :
वच् + ण्वुल् = वाचक :
दृश् + ण्वुल् = दर्शक :
नट् + ण्वुल् = नाटक :

कृ + ण्वुल् = कारक :
धृ + ण्वुल् = धारक :
लिख् + ण्वुल् = लेखक :

अमादि सन्धि

नी + ण्वुल् = नायक :
श्रु + ण्वुल् = श्रावक :
भू + ण्वुल् = भावक :

NOTE:- "दा" धातु और "गा" धातु के "ण्वुल प्रत्यय" लगता है तो धातु के "आ" के स्थान पर "ई" हो जाता है। और वृद्धि क्रिया होकर अमादि सन्धि हो जाती है।

Ex:- दा/गा

गा + ण्वुल्
↓ ↓
गी वु
↓ ↓
गै + अक = गायक :

दा + ण्वुल्
↓ ↓
दी वु
↓ ↓
दै + अक = दायक :

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(6.) 'तृच्' प्रत्यय

इस प्रत्यय का "तृ" शेष रहता है प्रयोग अर्थ में 'तृ' के स्थान पर 'ता' हो जाता है यह प्रत्यय भी वाला अर्थ के लिए प्रयुक्त होता है

* इस प्रत्यय में धातु में गुण क्रिया होती है।
* इस प्रत्यय का प्रारम्भिक वर्ण व्यंजन है अतः हलन्त युक्त धातुओं में इट् (इ) का आगम होता है तथा प्रत्यय का प्रारम्भिक वर्ण 'त' होने के कारण धातु के अन्तिम च्/ज् के स्थान पर 'क्' हो जाता है

Ex :-

नी + तृच् = नेता
क्री + तृच् = क्रेता
जि + तृच् = जेता
भी + तृच् = भेता
चि + तृच् = चेता
श्रु + तृच् = श्रोता
हु + तृच् = होता
दा + तृच् = दाता

कृ + तृच = कर्ता
गम् + तृच = गन्ता
हन् + तृच् = हन्ता
मन् + तृच् = मन्ता
वच् + तृच् = वक्ता
मुच् + तृच् = मोक्ता
भुज् + तृच् = भोक्ता
भज् + तृच् = भक्ता
त्यज् + तृच् = त्यक्ता

प्रत्यय	शेष	उदाहरण	विशेष
तुमुन्	तुम्	कर्तुम्	
तव्यत्	तव्य	कर्तव्य!	
अनीयर्	अनीय	करणीय	
ल्युट्	यु [अनम्]	करणम्	
ण्वुल्	वु [अक]	कारक!	
तृच्	तृ [ता]	कर्ता	

[7] यत् प्रत्यय

* इस प्रत्यय का "य" शेष रहता है यह प्रत्यय योग्य/चाहिए अर्थ में प्रयुक्त होता है।
* यह प्रत्यय स्वरान्त [ऋ को छोड़कर] धातुओं के लगता है।
* इस प्रत्यय में गुण क्रिया होती है।
* इस प्रत्यय में "उ/ऊकारान्त" धातुओं में गुण क्रिया के बाद "अवादि" सन्धि [वान्तो यि प्रत्यये' वार्तिक से 'ओ' के स्थान पर अव् हो जाता है] हो जाती है।
* आकारान्त धातुओं में 'आ' के स्थान पर 'ई' हो जाता है।

Ex:- 1. दा + यत्
↓ ↓
दी + य = देयः / देयम् (नपुंसकलिंग)

पा + यत्
↓ ↓
पी + य = पेयः / पेयम्

नी + यत् = नेयः / नेयम्
क्री + यत् = क्रेयः / क्रेयम्
जि + यत् = जेयः / जेयम्
भी + यत् = भेयः / भेयम्
चि + यत् = चेयः / चेयम्
श्रु + यत् = श्रव्यः / श्रव्यम्
हु + यत् = हव्यः / हव्यम्
भू + यत् = भव्यः / भव्यम्
} अवादि

[8] ण्यत् प्रत्यय

* इसका 'य' शेष रहता है। यह प्रत्यय भी योग्य/चाहिए अर्थ में प्रयुक्त होता है।
* इस प्रत्यय में इट् (इ) का आगम नहीं होता है।
* इस प्रत्यय में "ण्" का लोप हुआ है अतः धातु में आवश्यकता अनुसार वृद्धि क्रिया होती है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

* इस प्रत्यय में " चजो कु घिण्यतोः" सूत्र से च्/ज् के स्थान पर कवर्ग [क्/ग्] हो जाता है।

Ex:-

पठ् + ण्यत् = पाठ्यः / पाठ्यम्
हस् + ण्यत् = हास्यः / हास्यम्
वस् + ण्यत् = वास्यः / वास्यम्
पद् + ण्यत् = पाद्य/पाद्यम्
कृ + ण्यत् = कार्यः/कार्यम्
हृ + ण्यत् = हार्यः / हार्यम्
धृ + ण्यत् = धार्यः / धार्यम्

पूज् + ण्यत् = पूज्यः / पूज्यम्
वच् + ण्यत् = वाक्यः / वाक्यम्
भज् + ण्यत् = भाग्यः / भाग्यम्
भुज् + ण्यत् = भोग्यः / भोग्यम्
त्यज् + ण्यत् = त्याग्यः / त्याग्यम्
मृज् + ण्यत् = मार्ग्यः / मार्ग्यम्

NOTE:- यह ण्यत् प्रत्यय "ऋहलोर्ण्यत्" सूत्र से ऋकारान्त/हलन्तयुक्त धातुओं के लगता है। परन्तु "गम् / शप् / लभ्" और "गद् / पद् / मद् / चिद्"
* इन धातुओं के हलन्त होते हुए भी ण्यत् प्रत्यय न लगाकर यत् प्रत्यय लगता है। अतः इन सभी धातुओं के उदाहरण अपवाद के उदाहरण होते हैं।

अपवाद उदाहरण →

गम् + यत् = गम्यः / गम्यम्
शप् + यत् = शप्यः / शप्यम्
लभ् + यत् = लभ्यः / लभ्यम्
गद् + यत् = गद्यः / गद्यम्
पद् + यत् = पद्यः / पद्यम्
मद् + यत् = मद्यः / मद्यम्
चिद् + यत् = चेद्यः / चेद्यम्

[9] घञ् प्रत्यय — घ् अ ञ्

* इस प्रत्यय का 'अ' शेष रहता है यह प्रत्यय भाव अर्थ में प्रयुक्त होता है इस प्रत्यय में "ञ" का लोप हुआ है अतः आवश्यकतानुसार धातु में वृद्धि क्रिया होती है।
* इस प्रत्यय में चजोः कु घिण्यतोः सूत्र से धातु के अन्तिम च/ज्

* यह प्रत्यय यदि "रञ्ज" धातु के लगता है तो धातु के मध्यवर्ती "ञ" का लोप हो जाता है।

Ex:- रञ्ज + घञ
रज + अ
↳ राग: [रञ्ज धातु घञ प्रत्यय]

पठ + घञ = पाठ:	भज + घञ = भाग:	श्रु + घञ = श्राव:
लिख + घञ = लेख:	भुज + घञ = भोग:	भू + घञ = भाव:
हस + घञ = हास:	विद् + घञ = वेद:	हु + घञ = हाव:
वद् + घञ = वाद:	मुद् + घञ = मोद:	कृ + घञ = कार:
पच् + घञ = पाक:	नी + घञ = नय:	हृ + घञ = हार:
वच् + घञ = वाक:	जि + घञ = जय:	धृ + घञ = धार:
त्यज + घञ = त्याग:	भी + घञ = भय:	
	क्री + घञ = क्रय:	

NOTE:- "घञ" प्रत्यय से बनने वाला शब्द सदैव पुल्लिंग होता है।

[10] शतृ प्रत्यय [श अत ऋ]

* इस प्रत्यय का 'अत' शेष रहता है।
* यह प्रत्यय वर्तमानकाल में प्रयुक्त होता है
* यह प्रत्यय केवल "परस्मैपदी" धातुओं के लगता है।

गम् - गच्छ
स्था - तिष्ठ
दृश - पश्य
पा - पिब
प्रच्छ - पृच्छ

* इस प्रत्यय का प्रयोग वर्तमानकाल अर्थ में प्रयुक्त होता है।
* इस प्रत्यय से बनने वाले शब्द तीनों लिंगों में प्रयुक्त होते हैं।
* नपुंसक लिंग में अत पुल्लिंग में अन स्त्रीलिंग में अन्ती होता है।

पहचान

* किसी भी धातु के लट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन से बनने वाले पद में से अन्तिम "इ" का लोप कर देने पर जो शेष बचता है। वह शतृ प्रत्यय का उदाहरण होता है

Ex:-

	नपुंसकलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पठ् + शतृ =	पठत्	पठन्	पठन्ती
हस + शतृ =	हसत्	हसन्	हसन्ती
रक्ष + शतृ =	रक्षत्	रक्षन्	रक्षन्ती
वस + शतृ =	वसत्	वसन्	वसन्ती
वद् + शतृ =	वदत्	वदन्	वदन्ती
भू + शतृ =	भवत्	भवन्	भवन्ती
दृश + शतृ =	पश्यत्	पश्यन्	पश्यन्ती
स्था + शतृ =	तिष्ठत्	तिष्ठन्	तिष्ठन्ती
गम् + शतृ =	गच्छत्	गच्छन्	गच्छन्ती
पा + शतृ =	पिबत्	पिबन्	पिबन्ती

NOTE:- विद् [जानना] धातु के शतृ प्रत्यय लगाता है तो "विदेःशतुर्वसुः" सूत्र से धातु और प्रत्यय के बीच "वसु" [व्] का आगम होता है।

Ex:-

विद् + शतृ
↓
पुल्लिंग ← विद् + अत् → विद्वान

विद् + शतृ
↓
वस + अत्
↓
व + अत्
विद्वत् / विद्वान

(ii) शानच् प्रत्यय - श आन च्

* इस प्रत्यय का "आन" शेष रहता है यह प्रत्यय भी वर्तमान काल अर्थ में प्रयुक्त होता है।

* इस प्रत्यय का प्रयोग "आत्मनेपदी" धातुओं में होता है।

* इस प्रत्यय में हलन्तयुक्त धातुओं में "कर्तरि शप्" सूत्र से [श् अ प्] शप् का आगम होता है। तथा "आने मुक्" सूत्र से मुक् [म् उ क्] का आगम होता है।

सेव् + शानच्
↓ ↓
सेव् + आन

सेव् शप् मुक् + आन
↓ ↓ ↓
सेव् अ म् + आन ⇒ सेवमान:

"आने मुक्"

मुक् [म उ क्]

भास् + शानच् = भासमान:
भाष् + शानच् = भाषमाण:
लभ् + शानच् = लभमान
मुद् + शानच् = मोदमान:
पच् + शानच् = पचमान:
वृत् + शानच् = वर्तमान:
वृध् + शानच् = वर्धमान:
जन् + शानच् = जायमान: [जन् / जन्म → जाय हो जाता है]

NOTE :- दा / कृ / शीङ् इन तीनों धातुओं के शानच् प्रत्यय लगता है तो शप् व मुक् का आगम नहीं होता है। तथा 'दा' धातु के स्थान पर "दद्", कृ धातु के स्थान पर "कुर्व्" हो जाता है। और शीङ् धातु में गुण क्रिया के बाद अयादि सन्धि हो जाती है।

दा — दद्
कृ — कुर्व्
शीङ् — अयादि सन्धि

Ex :-

दा + शानच्
↓
दद् + आन
ददान:

कृ + शानच्
↓ ↓
कुर्व् + आन
कुर्वाण:

शीङ् + शानच्
↓ ↓
शी + आन
↓ ↓
शे + आन
शयान:

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(12.) ल्यप् प्रत्यय

* इस प्रत्यय का "य" शेष रहता है। यह प्रत्यय भूतकाल अर्थ में प्रयुक्त होता है।
* यह प्रत्यय केवल उपसर्ग युक्त धातुओं के ही लगता है।

Ex!-

प्र + दा + ल्यप् = प्रदाय!
आङ् + दा + ल्यप् = आदाय!
वि + हा + ल्यप् = विहाय!
वि + मुच् + ल्यप् = विमुच्य!
आङ् + गम् + ल्यप् = आगम्य!
सम् + भू + ल्यप् = सम्भूय!

NOTE!- "कृ" धातु के "ल्यप्" प्रत्यय लगता है तो धातु और प्रत्यय के बीच "ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्" सूत्र से तुक् [त्] का आगम होता है

Ex!-

प्र + कृ + ल्यप्
प्र + कृ
तुक् + य
↓
प्र + कृ त् + य = प्रकृत्य!

(13.) क्त्वा प्रत्यय

* इस प्रत्यय का 'त्वा' शेष रहता है। यह प्रत्यय भूतकाल अर्थ में प्रयुक्त होता है
* इस प्रत्यय में 'कृ' का लोप हुआ है। अतः "कित" की सभी विशेषताएँ लागू होती हैं अर्थात धातु में गुण वृद्धि क्रिया का अभाव, धातु के अन्तिम पञ्चम वर्ण का लोप और सम्प्रसारण क्रिया होती है।
* इस प्रत्यय में हलन्त युक्त धातुओं में "इट्" (इ) का आगम होता है
* इस प्रत्यय में धातु के अन्तिम च्/ज् के स्थान पर 'क्' हो जाता है।